Vol.- 01 Issue- 01 June 2025

त्रैमासिक समाचार पत्रिका

जनजाति संवाद

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

विशेष अंक

शुभकामना संदेश

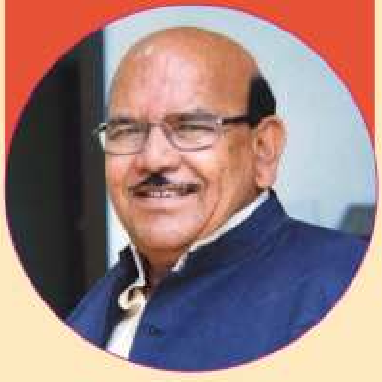

अंतर सिंह आर्य

अध्यक्ष,
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

प्रिय पाठकों,

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग का यह प्रथम समाचार पत्र (न्यूज़लेटर) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह प्रकाशन आयोग की गतिविधियों, उपलब्धियों और अनुसूचित जनजातियों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को जनमानस तक पहुँचाने का एक सार्थक प्रयास है।

आयोग का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों की रक्षा करना, उनकी सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक प्रगति को सुनिश्चित करना तथा उनकी समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी सुझाव सरकार को प्रदान करना है। इस न्यूज़लेटर के माध्यम से हम न केवल आयोग की पहल एवं कार्यों से आपको अवगत कराएंगे, बल्कि जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और उनके जमीनी अनुभवों को भी साझा करेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह न्यूज़लेटर आयोग और जनजातीय समुदाय के बीच संवाद का एक मजबूत माध्यम बनेगा तथा नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं और आम नागरिकों को भी अनुसूचित जनजातियों की वास्तविक स्थिति को समझने में मदद करेगा।

मैं इस प्रयास से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा करता हूँ कि यह प्रकाशन सतत् रूप से उपयोगी, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

अंतर सिंह आर्य

A New Beginning: Giving Voice to Tribal India

Nirupam Chakma
Chief Editor

We are pleased to present the first edition of the Newsletter of the National Commission for Scheduled Tribes (NCST), a significant step toward strengthening communication, transparency, and outreach with tribal communities in India and all stakeholders committed to their progress.

India's Scheduled Tribes represent a rich mosaic of cultures, traditions, and indigenous knowledge systems. For generations, they have lived in harmony with nature, preserving ecological balance while nurturing distinct socio-cultural identities. In this context, the National Commission for Scheduled Tribes plays a vital role that goes beyond its constitutional mandate. It serves as a guardian of rights, a facilitator of development, and a bridge between policy and people.

Through this newsletter, we aim to showcase the Commission's latest activities, policy recommendations, field visits, hearings, community interactions, and research findings. Additionally, this platform will highlight inspiring stories, grassroots innovations, and the cultural vibrancy of tribal communities. By doing so, we hope to inform and inspire collective action, empathy, and policy sensitivity.

This newsletter is more than just a publication; it is an invitation to engage. We urge readers—government officials, civil society members, academicians, and citizens—to view this as a space for dialogue, learning, and shared responsibility.

We express our sincere gratitude to all those who have contributed to the creation of this inaugural issue, especially the dedicated staff and experts who work tirelessly toward tribal upliftment.

As we embark on this new journey of outreach and inclusion, let us reaffirm our commitment to "Empowered Tribes, Empowered Nation."

Warm regards

Nirupam Chakma

Member, National Commission for Scheduled Tribes (NCST)

शुभकामना संदेश

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ने अपनी गतिविधियों एवं कार्यों से आम जनता को अवगत कराने हेतु त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत की हैं, जिससे आयोग द्वारा जनजातीय समुदाय के कल्याण, विकास एवं उत्थान के लिए उठाए गए विशिष्ट प्रयासों के विषय में जानकारी दी जाएगी। साथ ही पत्रिका के प्रथम संस्करण में सातवें आयोग के गठन से आज तक विभिन्न मंत्रालयों, राज्यों, जिलों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की समीक्षा रिपोर्ट एवं विभिन्न प्रकरणों में की गयी स्थलीय जाँच एवं सुनवाई का समावेश किया गया है।

आयोग द्वारा यह पत्रिका प्रकाशित करना जनजातीय समुदाय की संस्कृति और समाज के समग्र कल्याण की दिशा में एक सराहनीय पहल है। यह पत्रिका पाठकों को एक नई सोच और दृष्टिकोण प्रदान करेगी।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु इससे जुड़े आयोग के समस्त दल को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति करती रहेगी तथा आप सभी पाठकों को आयोग की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराती रहेगी।

अत्यंत शुभकामनाओं सहित

डॉ. आशा लाकड़ा

डॉ. आशा लाकड़ा

सदस्य,
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

शुभकामना संदेश

जाटोतु हुसेन

सदस्य,
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के त्रैमासिक संवाद-पत्र का पहला संस्करण प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। यह संवाद-पत्र वह माध्यम है जिसके जरिए जनजातीय विकास के हितधारक एक-दूसरे के विचारों और राय का आदान-प्रदान करेंगे और यह भारत में अनुसूचित जनजातियों की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने का एक सामूहिक मंच होगा।

अनुसूचित जनजातियाँ अनादि काल से इस भूमि की मूल निवासी और देशज रही हैं और प्रकृति के साथ जीवनयापन करती रही हैं। अनुसूचित जनजाति समुदायों ने एक-दूसरे की संस्कृतियों का सम्मान करते हुए शांतिपूर्वक जीवन यापन किया है। समृद्ध स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ भावी पीढ़ियों के लिए सतत जीवन शैली का प्रेरणा स्रोत हैं।

एक संवैधानिक निकाय होने के नाते, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित मुद्दों का संज्ञान लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आयोग अपने अधिदेश के अंतर्गत व्यापक जन सुनवाई और समीक्षाओं के माध्यम से, जमीनी स्तर पर वास्तविक्ताओं को सामने लाएगा जो नीति निर्धारण के लिए अहम है। इस संवाद-पत्र का उद्देश्य अनुसूचित जनजातियों से संबंधित शिकायतों के निवारण हेतु आयोग द्वारा किए गए प्रयासों की अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराना है।

अनुसूचित जनजाति कल्याण और विकास से संबंधित सभी नीतियों पर परस्पर और रचनात्मक संवाद इस प्रयास का हिस्सा होगा। नीति निर्माताओं, समाज विज्ञानियों, मानवविज्ञानियों, शिक्षाविदों और गैर-सरकारी संगठनों, समुदाय आधारित नागरिक समाज के संगठनों से इस नेक कार्य में योगदान की अपेक्षा है। हमें उम्मीद है कि इस संवाद-पत्र के कई रोचक संस्करण हमारे प्रयासों को हर बार नई ऊर्जा प्रदान करेंगे।

शुभकामनाएं

जाटोतु हुसेन

Quarterly (June 2025)

PATRON
Shri Antar Singh Arya
Hon'ble Chairperson, NCST

CHIEF EDITOR
Shri Nirupam Chakma
Hon'ble Member, NCST

EDITORIAL BOARD
Shri Amit Nirmal
Joint Secretary

Shri P. Kalyan Reddy
Director

Shri R. K. Dubey
Deputy Director

Shri Gaurav Kumar
Special Invitee

Smt. Bhawna Madan
Assistant Director (Official Language)

Mr. Mukesh Kumar
Investigator

OFFICE:
6th Floor, B-Wing, Loknayak Bhawan,
Khan Market, New Delhi- 110003

Designed & Printed:
Creative Guru
info.creativeguru@gmail.com

Inside

Key Events and Activities of the Commission (Past One Year)

- Ministry Reviews 09
- State Reviews 12
- District Reviews 23
- Review of Central Public Sector Undertakings / Universities and other Institutions 50
- NCST Activities 67

Writings/Articles Authored by Commission Staff

सफलता की एक और कहानी...
अंतर सिंह आर्य, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ... 84

सांस्कृतिक धरोहर ही हमारी पहचान
डॉ आशा लाकड़ा, सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ... 87

खुश रहना-एक कला
मुक्ता मकड़, वरिष्ठ निजी सचिव, राष्ट्रीय अनुसूचित 89
जनजाति आयोग

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ
भावना मदान, सहायक निदेशक (राजभाषा),
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग 91

मेरी यादगार यात्रा
वसीम अकरम, संयुक्त सचिव के निजी सहायक, राष्ट्रीय
अनुसूचित जनजाति आयोग 93

बोलो अब तुम! (कविता)
रवीश, एम.टी.एस., राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग 95

विद्या (कविता)
राम प्रवेश चौहान, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद, विद्युत
बी एम 2, लिफ्ट आपरेटर, लोक नायक भवन 96

Social Media Corner 97

Ministry Reviews

Ministry Review
Ministry of Rural Development (06 May 2025)

NCST held a review meeting with the Ministry of Rural Development at Krishi Bhavan, New Delhi, chaired by Hon'ble Chairman Shri Antar Singh Arya, with Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra, and Shri Jatothu Hussain. Key issues of ST welfare in Rural areas were discussed.

Ministry Review
Ministry of Panchayati Raj (16 June 2025)

The National Commission for Scheduled Tribes held a review meeting with the Ministry of Panchayati Raj on the constitutional safeguards for Scheduled Tribes.

State Reviews

State Review

Jharkhand (30 August 2024)

A team led by the Hon'ble Chairperson Shri Antar Singh Arya, along with Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra, Shri Jatothu Hussain, the Secretary of NCST, and other officers/officials, visited the State of Jharkhand to conduct the State review meeting.

State Review

Maharashtra (9 January 2025)

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा आयोजित महाराष्ट्र राज्य की समीक्षा बैठक आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में आयोग के माननीय सदस्यगण एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson & Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma & Shri Jatothu Hussain, along with NCST team meet with C. P. Radhakrishnan, Hon'ble Governor, Maharashtra at Rajbhavan.

The Hon'ble Chairperson of NCST had a courtesy meeting with the Hon'ble Chief Minister of Maharashtra, the Hon'ble Tribal Development Minister Shri Ashok Uikey.

State Review

Mizoram (30 April 2025)

Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson, accompanied by Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra, Shri Jatothu Hussain and Secretary, NCST chaired the meeting to review constitutional safeguards and the implementation of development and welfare schemes for the Scheduled Tribes in the State of Mizoram.

Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson & Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra, & Shri Jatothu Hussain, along with NCST team meet with General (Dr) Vijay Kumar Singh, Hon'ble Governor, Mizoram at Rajbhavan on 1 May 2025.

1st May 2025: Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson led NCST team met with the Hon'ble Chief Minister of Mizoram at the Chief Minister's Office

Mara Autonomous District Council (MADC) attended the meeting with Mara Janjati Samaj at Siaha, Mizoram. The meeting was chaired by Hon'ble Chairman of National Commission for Scheduled Tribes and Hon'ble Members were present and delivered their views.

Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson of the National Commission for Scheduled Tribes (NCST), Government of India, along with Members of the Commission, visited Siaha on 29 April 2025. A felicitation programme for the Chairperson and NCST Members was held at the Chief Executive Member's (CEM) Bunglow.

NCST led by Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson & Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra, & Shri Jatothu Hussain, visited Chakma Autonomous District Council at Kamalanagar, Mizoram on 29 April 2025.

State Review

Goa (21 May 2025)

Goa State review presided by Hon'ble Chairperson Sh Antar Singh Arya, accompanied by Hon'ble Member Sh Nirupam Chakma, Hon'ble Member Dr. Asha Lakra, and Hon'ble Member Sh Jatothu Hussain.

In pursuance of the constitutional mandate, the Commission Reviewed the Implementation of Constitutional Safeguards, Welfare, and Development Schemes for Scheduled Tribes, including the reservation policy in the Goa Shipyard Limited on 20th May 2025. The NCST team was led by Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairperson, along with him were Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, Dr. Asha Lakra, Hon'ble Member, and Shri Jatothu Hussain, Hon'ble Member.

District Reviews

District Review

Review Meeting with District Collector, Mahabubabad and District Officials by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 20 June 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनांक 21जून 2024 को डॉ आशा लाकड़ा की अध्यक्षता में जिला प्रशासन लोहरदगा, झारखंड की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। समीक्षा बैठक से पूर्व अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधियों से अनुसूचित जनजाति की समस्याओं के विषय में वार्तालाप हुई।

Review Meeting with District Collector, Mulugu, SP Mulugu, ITDA PO and DFO by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 21 June 2024.

Review Meeting with JC Radhika Gupta, JC, Hanumakonda by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 22 June 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनाँक 23 जून 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला देवघर, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय देवघर में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 01 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला खूँटी, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, खूँटी में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 05 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला प्रशासन गुमला, झारखंड की समीक्षा बैठक हुई। समीक्षा बैठक से पूर्व जिला गुमला के राजकीय अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका उच्च विद्यालय चापाटोली, विशुनपुर (स्थापना 07.03.1963) में निरीक्षण किया गया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 15 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला प्रशासन साहिबगंज, झारखंड की समीक्षा बैठक हुई। समीक्षा बैठक से पूर्व, जिला साहिबगंज के अनुसूचित जाति बालिका छात्रावास, पोखरिया एवं आदिवासी कल्याण बालक छात्रावास, साहिबगंज का निरीक्षण किया गया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनाँक 16 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला गोड्डा, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, गोड्डा में सम्पन्न हुई।

Review Meeting with DC, Rajanna Sirisilla District Sandeep Kumar J and District SP Akhil Mahajan by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 18 July 2024.

Review Meeting with DC, Alluri Seetharamaraju District, AP by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 19 July 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 19 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला सिमडेगा, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, सिमडेगा में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनाँक 23 जुलाई 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला जामताड़ा, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, जामताड़ा में सम्पन्न हुई।

Review Meeting with DC, Nagpur, Maharashtra by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 29 July 2024.

Review Meeting with District Collector, Mahabubabad by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 01 August 2024.

Review Meeting with District Collector, Jangoan-Rizwan Bhasha Sheikh by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 2 August 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 05 अगस्त 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला पूर्वी सिंघभूम, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, पूर्वी सिंघभूम में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 06 अगस्त 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला सरायकेला खरसवां, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, सरायकेला खरसवां में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 07 अगस्त 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला पश्चमी सिंघभूम, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, पश्चमी सिंघभूम में सम्पन्न हुई।

Review Meeting with DC, Bangalore by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 9 August 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 10 अगस्त 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला दुमका, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, दुमका में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनाँक 29 अगस्त 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला राँची, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, राँची में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 09 सितम्बर 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला हजारीबाग, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, हजारीबाग में सम्पन्न हुई।

Review Meeting with DC, Ganjam District of Odisha State by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 13 September 2024.

Review Meeting with DC, Srikakulam, AP- Swapnil Dinakar Pundkar by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 15 September 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनाँक 18 सितम्बर 2024 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला लातेहार, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, लातेहार में सम्पन्न हुई।

Review Meeting with DC, Prakasham, AP A. Thameem Ansaria by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 28 September 2024.

Review Meeting with DC, North Goa District Collector and senior officials by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 29 October 2024.

Review Meeting with DC, South Goa by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 29 October 2024.

Review Meeting with DC Satyasai District, AP by Hon'ble Member Sh. Jatothu Hussain on 21 January 2025.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 22 मार्च 2025 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला जामनगर, गुजरात की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, जामनगर में सम्पन्न हुई।

The NCST conducted a district-level review meeting of Gomati district, Tripura, with senior district officers on 22 April 2025 at the Conference Hall of PRTI, Udaipur. The meeting was chaired by Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 03 मई 2025 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला लाहौल एवं स्पीति, हिमाचल प्रदेश की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, लाहौल एवं स्पीति में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 04 मई 2025 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, कुल्लू में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा जी ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान जिला चिकित्सालय स्थित जन औषधि केंद्र, देहरादून का निरीक्षण 27 मई 2025 को किया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा जी ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान 27 मई 2025 को जिला चिकित्सालय, देहरादून में स्वास्थ्य सेवाओं का निरीक्षण किया। अस्पताल में भर्ती मरीजों से मिलकर उनका कुशलक्षेम जाना।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा जी ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान जन औषधि केंद्र, रुद्रपुर, उधम सिंह नगर का निरीक्षण 26 मई 2025 को किया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 27 मई 2025 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला धनबाद, झारखंड की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, धनबाद में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा जी ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान 28 मई 2025 कोवन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की समीक्षा बैठक की। समीक्षा बैठक में संस्थान की निदेशक डॉ. रेनू सिंह, IFS सहित संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी व लाइजन अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 04 जून 2025 को डॉ आशा लाकड़ा, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अध्यक्षता में जिला संबलपुर, ओडिशा की समीक्षा बैठक समाहर्ता कार्यालय, संबलपुर में सम्पन्न हुई।

The NCST conducted a review meeting with senior officials Nicobar district of Andaman & Nicobar islands at the Conference Hall on 07 June 2025. The meeting was chaired by Hon'ble Member Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member Dr. Asha Lakra and other NCST officials were also present.

Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma and Dr. Asha Lakra held a meeting with ST representatives and community members at the South Point Circuit House, Shri Vijaya Puram, to discuss key issues concerning tribal communities of Andaman and Nicobar Islands.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के संयुक्त सचिव, श्री अमित निर्मल द्वारा 19 जून 2025 से दिनांक 21 जून 2025 तक राजस्थान के जयपुर जिले का दौरा किया गया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के संयुक्त सचिव, श्री अमित निर्मल द्वारा जयपुर में राजस्थान सरकार के जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अतिरिक्त प्रमुख सचिव के साथ बैठक की गई।

ग्रामीण वृद्धाश्रम एवं बांध निर्माण की माँग को लेकर संयुक्त सचिव को ज्ञापन देते हुए।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 26 जून 2025 को डॉ आशा लाकड़ा की अध्यक्षता में जिला प्रशासन कारगिल की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 28 जून 2025 को डॉ आशा लाकड़ा की अध्यक्षता में जिला प्रशासन लेह-लद्दाख, केंद्र शासित प्रदेश की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। जिला लेह-लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश में अनुसूचित जनजातियों के लिए चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं और केंद्र सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की।

Hon'ble NCST members Shri Nirupam Chakma and Shri Jatothu Hussain conducted a district review of Darjeeling, West Bengal, as part of their official visit.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने दादरा और नगर हवेली जिले के मुख्यालय सिलवासा में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण और विकास हेतु चलाई जा रही योजनाओं के क्रियान्वयन पर जिला स्तरीय समीक्षा बैठक की।

आयोग के अध्यक्ष माननीय श्री अंतर सिंह आर्य, भारत के संघ राज्य क्षेत्र दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव में सिकल सेल एनीमिया जांच शिविर का उद्घाटन किया। इसके पश्चात, उन्होंने जनजातीय युवाओं के साथ संवाद किया।

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma visited the Jan Aushadhi Kendra at Gomati District Hospital, Udaipur, Tripura to review the facilities and ensure the scheme's accessibility to all beneficiaries.

Hon'ble Member Sh. Nirupam Chakma, Member, NCST, along with Smt. Alka Tiwari, Secretary, NCST & some officials, NCST reviewed the implementation of Constitutional safeguards, welfare and development schemes for Scheduled Tribes in the Dima Hasao District, Assam.

आयोग के अध्यक्ष माननीय श्री अंतर सिंह आर्य, भारत के संघ राज्य क्षेत्र दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव में जिला स्तरीय समीक्षा के लिए सिलवासा नगर पहुंचे। उन्होंने जनजातीय समुदाय से संवाद किया तथा "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत वृक्षारोपण किया।

PSUs / Institutions / Universities Review

Review meeting with the ST Employees and Administration of Electronics Corporation of India Limited (ECIL), Hyderabad by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 05 June 2024

Meeting with ST employees and Management of Singareni Colleries company Limited (SCCL), Bhupalpalli , Telangana by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 07 June 2024.

Meeting with ST Employees and Management of Ordnance Factory, Thiruchirappali by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 10 June 2024.

Meeting with ST Employees and Management of Southern Railway Chennai Division by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 11 June 2024.

Meeting with ST Employees and Management of Integral Coach Factory in Chennai, Milan by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 11 June 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की माननीय सदस्य डॉ आशा लाकड़ा की अध्यक्षता में अनुसूचित जनजतियों के लिए आरक्षण नीति (सेवा सुरक्षणों), उनके सामाजिक आर्थिक विकास के लिए योजनाओं के कार्यान्वयन के मूल्यांकन एवं निगरानी तथा अन्य गतिविधियों पर सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड, राँची के साथ दिनाँक 13 जून 2024 को समीक्षा बैठक आयोजित की गयी।

Review with ST Employees and Management of Telangana State Northern Power Distribution Company Limited (TSNPDCL), Hanumakonda, Telangana by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 22 June 2024.

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST along with Smt. Alka Tiwari Secretary, NCST Shri K. Touthang, Joint Secretary, NCST & other NCST Officials visited Michidui, Sampardisa and Jatinga Tribal Villages under North Cachar Hills Autonomous Council, Dima Hasao District, Assam on 17 July 2024.

Hon'ble Member of the National Commission for Scheduled Trible, Shri Nirupam Chakma visited the North Eastern Hill University, Meghalaya on 18 July 2024.

After the interactive meeting with the Chief Executive Member and Executive Members of NCHAC, Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST planting a sampling in the premises of North Cachar Hills Autonomous Council Secretariat on 18 July 2024.

After the interactive meeting with the Chief Executive Member and Executive Members of NCHAC, Smt. Alka Tiwari, Secretary, NCST planting a sampling in the premises of North Cachar Hills Autonomous Council Secretariat on 18 July 2024.

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST along with Smt. Alka Tiwari Secretary, NCST & other NCST Officials reviewed NEDFi on 24 July 2024 at NEDFi Office, Guwahati, Assam.

Review Meeting at Coffee Board, Bengaluru by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 09 August 2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 22 अगस्त 2024 को रांची में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक की गई। बैठक में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा, डॉ. आशा लाकड़ा, सचिव श्रीमती अलका तिवारी व आयोग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

Review Meeting at Odisha Mining Corporation, Bhubaneshwar by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 12 September 2024.

Hon'ble Member of the National Commission for Scheduled Trible, Shri Nirupam Chakma visited the Tezpur University, Assam on 23 October 2024.

Review Meeting at Murmugoa Port Management, Port Authority and Employees, Goa by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 30 October 2024.

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST, was warmly welcomed in their traditional customary way by the people of the Chakma Autonomous District Council (CADC) upon his arrival in Kamalanagar, Lawngtlai district, Mizoram on 7 November 2024.

Review Meeting at Cochin Shipyard Limited, Kochi, Kerala by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 19 November 2024.

Review Meeting at Kochi Oil Refinery, Kochi, Kerala by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 19 November2024.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने उदयपुर स्थित हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के कार्यालय का दौरा 28 नवंबर 2024 को किया।

Review Meeting with Bharat Sanchar Nigam Limited (BSNL) Telangana Telecom Circle by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 02 December 2024.

Review Meeting with Food Corporation of India (FCI), Nampally, Hyderabad by Hon'ble Member Shri Jatothu Hussain on 04 February 2025.

Hon'ble member, NCST Shri Nirupam Chakma visited Tribal Hostel at Pandav Nagar, New Delhi on 28 March 2025.

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma, held a review meeting with officials of the North Eastern Council (NEC) at the NEC Office, Nongrim Hills, Shillong, Meghalaya on 25 April 2025.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की माननीय सदस्य डॉ आशा लाकड़ा की अध्यक्षता में अनुसूचित जनजतियों के लिए आरक्षण नीति (सेवा संरक्षणों), उनके सामाजिक आर्थिक विकास के लिए योजनाओं के कार्यान्वयन के मूल्यांकन एवं निगरानी तथा अन्य गतिविधियों पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय झारखंड में 08 अप्रैल 2025 को समीक्षा बैठक आयोजित की गयी।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, बाजपुर उधम सिंह नगर का निरीक्षण 26 मई 2025 को किया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा दिनांक 28 मई 2025 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के सी. एम. डी. एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ जिला धनबाद, झारखंड में समीक्षा बैठक की गयी।

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST along with Shri Puneet Kumar Goel, IAS, Secretary, NCST attended the Statutory Full Commission meeting of NHRC at Garvi Gujarat, New Delhi on 03 June 2025. The meeting was presided over by NHRC Chairperson Justice V. Ramasubramanian.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की माननीय सदस्या डॉ आशा लाकड़ा द्वारा लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद कारगिल के साथ दिनांक 26 जून 2025 को लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद कारगिल के परिसर में बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता डॉ आशा लकड़ा, माननीय सदस्या द्वारा की गयी।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की माननीय सदस्या डॉ आशा लाकड़ा द्वारा लेह, लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद के साथ दिनांक 27 जून 2025 को लेह, लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद के परिसर में बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता डॉ आशा लकड़ा, माननीय सदस्या द्वारा की गयी।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने खरगौन जिले के झिरन्या वि.ख. में स्थित शासकीय आदिवासी कन्या छात्रावास का आकस्मिक निरीक्षण किया।

Hon'ble Member of the National Commission for Scheduled Trible, Shri Jatothu Hussain visited the Central Scientific Instruments Organisation in Chandigarh.

Shri Jatothu Hussain, Hon'ble Member, visited CSIR-CSIO, Chandigarh. Discussed & oversaw the implementation of constitutional safeguards for ST communities.

NCST Activities

Activities

The National Tribal Research Institute (NTRI), under the Ministry of Tribal Affairs, organized a workshop titled 'Empowering Tribal Youth with New Age Skills', in New Delhi on 30 July 2024. The event was presided over by Member (National Commission for Scheduled Tribes), Shri Nirupam Chakma, as the Chief Guest.

नई दिल्ली में 24 सितम्बर 2024 आयोजित समता सैनिक दल के स्थापना शताब्दी समारोह में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा जी शामिल हुए।

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma attended the International Conference on 'Buddhism in India: Its Revival and Development' at Swami Vivekanand Subharti University, Meerut on 15 October 2024 .

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member of the National Commission for Scheduled Tribes (NCST), interacted with Interns of National Human rights Commission, New Delhi on 2 January 2025 .

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर गृह मंत्री श्री अमित शाह को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

NCST के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा, डॉ. आशा लाकड़ा और श्री जटोतु हुसेन तथा NCSC के माननीय सदस्य श्री वड्डेपल्ली रामचंदर ने नई दिल्ली स्थित कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया और राष्ट्र के संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम व्यक्त किया।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

22nd Foundation Day of NCST

Lighting of the lamp by Hon'ble Chairperson, NCST, Shri Antar singh Arya and Hon'ble members, NCST, Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra & Shri Jatothu Hussain during the grand celebration of the 22nd Foundation Day of NCST.

Hon'ble Union Minister of Tribal Affairs, Shri Jual Oram, was warmly welcomed as the Chief Guest at the grand celebration of NCST's Foundation Day.

Hon'ble Chairperson, NCST, Shri Antar Singh Arya delivered an address on the 22nd Foundation Day of NCST, highlighting the commission's continuous efforts in tribal upliftment and its tireless work for their betterment.

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma delivered the keynote address on the momentous occasion of NCST's 22nd Foundation Day, emphasizing the commission's dedication to tribal rights and development.

Hon'ble Member, NCST, Dr. Asha Lakra delivered the keynote address on the 22nd Foundation Day of NCST, highlighting the commission's unwavering commitment to tribal rights and holistic development.

Hon'ble Member, NCST, Shri Jatothu Hussain delivered the keynote address on the 22nd Foundation Day of NCST and encouraged the youth to work enthusiastically for the nation.

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST, chaired a roundtable discussion at the Indian Anthropology Congress 2025 at AnSI, Kolkata on 23 February 2025.

Shri Jatothu Hussain, Hon'ble Member of NCST, graced the 6th Asian Savate Championship as the Chief Guest at Talkatora Stadium, New Delhi, adding prestige to the event.

Hon'ble Chairperson, Shri Antar Singh Arya, with Hon'ble Member Shri Nirupam Chakma and Joint Secretary Shri Amit Nirmal graced Policy Samvad's workshop on *"Funding the Future: Public Policy and Finance for Tribal and Inclusive Growth"*, highlighting the role of policy and finance in tribal development on 28 March 2025.

Hon'ble Member NCST Shri Nirupam Chakma ji attended The State Level Bizu Mela held on 15th April 2025 at Nunsury ,District Lunglei, Mizoram.

माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा एग्यारकुण्ड, दक्षिण पंचायत, जिला-धनबाद, झारखंड में 25 मई 2025 को पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर जी की 300वीं जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर मंदिर परिसर में जनजातीय समुदाय के साथ संगोष्ठी में वक्तव्य प्रकट किया एवं महारानी अहिल्याबाई होलकर जी के प्रेरणादायी जीवन और योगदान पर प्रकाश डाला।

माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा धनबाद के कोयलानगर में 27 मई 2025 को भारतीय सेवा वाहिनी, धनबाद के संयुक्त तत्वधान में पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर जी की 300वीं जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता की।

माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा जिला संबलपुर में 04 जून 2025 को जनजातीय संगठनों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ जिला स्तरीय बैठक की। बैठक के दौरान उनकी विभिन्न समस्याओं के विषय में विस्तार से चर्चा की।

माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा गाँव चुहरु, जिला गुमला, झारखंड में 21 जून 2025 को चुहरु गाँव के ग्रामीणों के साथ बैठक कर आयोग के कार्य एवं शक्तियों तथा सरकार की गरीब कल्याण योजनाओं के विषय में जानकारी दी।

माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा राँची के पंडरा बाज़ार समिति के प्रांगण में 22 जून 2025 को जनशक्ति मजदूर यूनियन के अध्यक्ष श्री ललित नारायण ओझा जी एवं यूनियन के पदाधिकारी व मोटिया मजदूर भाइयों के साथ वृक्ष रोपित किया एवं जनसमुदाय से "पर्यावरण संतुलन" हेतु वृक्षारोपण करने के लिए आग्रह किया।

Some glimpses from the Hon'ble Chairperson of NCST's visit to Parliament and meetings with the Vice President of India, esteemed Ministers and Mps.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष व सदस्यों ने संसदीय संकुल विकास परियोजना बैठक में सहभागिता की, जिसमें श्री जुएल ओरम, श्री वी. सतीश, श्री समीर उरांव, श्री गजानंद डांगे, श्रीमती सावित्री ठाकुर, श्री गजेन्द्र सिंह पटेल, श्री दुर्गा दास उइके शामिल हुए।

आयोग की माननीय सदस्या डॉ. आशा लाकड़ा द्वारा झारखंड राज्य के संथाल परगना प्रमंडल (जिलों – साहिबगंज, जामताड़ा, पाकुड़, दुमका एवं गोड्डा) में "जनसांख्यिकी परिवर्तन पर विशेष रिपोर्ट – 2024" तैयार की गयी, जिसे भारत के माननीय राष्ट्रपति, माननीय गृह मंत्री तथा भारत सरकार के अन्य कैबिनेट मंत्रियों को प्रस्तुत किया गया।

Shri Nirupam Chakma, Member, NCST, attended the Triennial Conference of the All India Union Bank SC/ST Employees' Association at Terna Dental College, Navi Mumbai.

Dr. Asha Lakra, Member, NCST attended Lok Mahotsav at CVS, DU, as the chief guest. She addressed the gathering as students showcased tribal dances and honored tribal warriors' role in India's freedom struggle.

Hon'ble Chairperson of NCST, Shri Antar Singh Arya, visited the Aadi Mahotsav at Major Dhyan Chand Stadium, New Delhi. He explored the rich heritage of tribal handicrafts, arts, and cuisine, celebrating India's diverse indigenous culture.

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य बुरहानपुर जिले के चिखलिया ग्राम में जनजातीय समाज के पारंपरिक इंदल पूजा कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में जनजातीय समाज के कई बंधुओं ने भाग लिया।

Hon'ble Members Shri Nirupam Chakma and Dr. Asha Lakra participated in a tree planting program under the *'Ek Ped Maa Ke Naam'* campaign during the Commission's visit to the Andaman & Nicobar Islands. The event was held at Vivekananda Park, Port Blair, in the presence of district officials and accompanying NCST officers.

अपनी बात

सफलता की एक और कहानी...

अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006

अंतर सिंह आर्य
माननीय अध्यक्ष,
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006, अनुसूचित जनजातियों को प्रभावित करने वाले देश के महत्वपूर्ण कानूनों में से एक महत्वपूर्ण भारतीय है, जो वनवासी समुदायों के साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने का प्रयास करता है, तथा भूमि और संसाधनों पर उनके अधिकारों को मान्यता प्रदान करता है, जिन पर वे पीढ़ियों से निर्भर रहे हैं। यह अधिनियम अनुसूचित जनजातियों और अन्य पारंपरिक वनवासियों की आजीविका को सुरक्षित करने के साथ-साथ सतत विकास सुनिश्चित करने की दिशा में नींव का पत्थर है।

वन अधिकार अधिनियम का मुख्य उद्धेश्य जनजातीय स्थानीय स्वशासन को सशक्त और मजबूत बनाते हुए लोगों की आजीविका सुरक्षा को संरक्षण प्रदान करना है, जिससे गरीबी उन्मूलन और सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। साथ ही परोक्ष रूप से भारत में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रबंधन तथा संरक्षण के मुद्दों पर ध्यान देना भी है।

यह अधिनियम व्यक्तिगत या साझा कब्जे के तहत वन भूमि पर निवास करने या आजीविका के लिए स्व-कृषि के अधिकार, वन संसाधनों पर नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए कई अन्य अधिकार भी प्रदान करता है, जिनमें भूमि स्वामित्व का अधिकार, संग्रह करने की पहुंच, लघु वन उपज का उपयोग और निपटान, सामुदायिक अधिकार जैसे आदिम जनजातीय समूहों और पूर्व-कृषि समुदायों के लिए आवास अधिकार, किसी भी सामुदायिक वन संसाधन की रक्षा, पुनर्जनन, संरक्षण या प्रबंधन का अधिकार, जिसे वे पारंपरिक रूप से स्थायी उपयोग के लिए संरक्षित करते आ रहे हैं। अधिनियम में ग्राम सभा की सिफारिश से सरकार द्वारा प्रबंधित सार्वजनिक उपयोगिता सुविधाओं, जैसे उचित मूल्य की दुकानें, स्कूल, औषधालय, बिजली और दूरसंचार लाइनें, पानी की टंकियां आदि के लिए वन भूमि के उपयोग का भी प्रावधान है। यह अधिनियम वनों से क्षेत्र से जबरन बेदखली के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है। इसकी धारा 4(5) में प्रावधान है कि वन में रहने वाली अनुसूचित जनजाति या अन्य पारंपरिक वनवासियों के किसी भी सदस्य को मान्यता और सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने तक उसके कब्जे वाली वन भूमि से बेदखल या हटाया नहीं जाएगा। यदि किसी को बेदखल किया जाता है तो पीड़ित व्यक्तियों द्वारा एसडीएलसी और डीएलसी [एफआरए की धारा 6(2) और 6(4)] को याचिका दायर करने का प्रावधान है।

आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों के पदभार ग्रहण करने के उपरान्त उनके अनुभव के आधार पर वन अधिकार अधिनियम, 2006 के कार्यान्वयन में आने वाली मुख्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

- **जागरुकता और शिक्षा का अभाव:**
- **अन्य वन कानूनों के साथ टकराव:**
- **जनजातीय कार्य मंत्रालय की सीमाएं:** जनजातीय कार्य मंत्रालय के पास इस अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने

के नियम और दिशा निर्देश बनाने का दायित्व है किन्तु वास्तव में पात्र लोगों या जनजातीय समुदाय तक इसका लाभ पहुंचाने का काम राज्य, संघ शासित क्षेत्र सरकार और जिला प्रशासन का है। अतः विभिन्न प्रावधानों को लागू करवाने में मंत्रालय की सीमित भूमिका है।

- **दावों की गलत अस्वीकृति:** अपात्र व्यक्तियों के दावों की गलत अस्वीकृति भी हो रही है, जो आमतौर पर अधिकारियों द्वारा उचित जांच न किए जाने अन्यथा पात्र व्यक्तियों में भेदभाव होने के कारण होती है।
- **दूसरे मामले:**

o राज्य सरकार द्वारा गठित निर्वाचित पदाधिकारियों की सतर्कता समिति निष्क्रिय है।

o वन अधिकार अधिनियम के तहत प्रस्तुत दावों में से अधिकांश व्यक्तिगत पट्टे के लिए प्रस्तुत दावे हैं तथा केवल 4% समुदाय आधारित दावे प्रस्तुत हुए हैं।

o कार्यान्वयन संबंधी समस्याओं की पहचान कर उनसे निपटने के बजाय, सरकार नए कानून या के माध्यम से सुधार का प्रयास करती है, जिससे परस्पर विरोधी कानूनी स्थितियों का एक जटिल चक्रव्यूह निर्मित हो जाता है।

- स्थानीय अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधियों और एफआरसी, डीएलसी और एसडीएलसी के कई सदस्यों से व्यक्ति संवाद करने के बाद, मुझे पता चला कि उन्हें इस अधिनियम के बारे में बहुत कम जानकारी है। अधिकांश समिति के सदस्यों ने स्वीकार किया कि वे आमतौर पर अध्यक्ष के अनुरोध पर समिति के आदेश पर हस्ताक्षर कर दिया जाता है। समिति की सदस्यों को समिति की बैठकों के लिए आमंत्रित किया जाता है। इन प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि सामुदायिक नेता और इन समितियों के गैर-सरकारी सदस्य इस अधिनियम की बारीकियों से अवगत नहीं हैं। लाभार्थियों में इस अधिनियम के बारे में जानकारी का अभाव उन्हें निर्णयों को चुनौती देने से हतोत्साहित करता है।
- वन अधिकार अधिनियम का खराब कार्यान्वयन केवल नौकरशाहों द्वारा किए जा रहे विलम्ब ही नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण भी है। उनका मानना है कि वन अधिकारों के मुद्दे को मुख्यधारा के राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो सरकारी अधिकारी निराधार आधार पर दावों को खारिज करते रहेंगे, और वन अधिकार अधिनियम केवल कागज़ों पर ही एक ऐतिहासिक कानून बनकर रह जाएगा।

उक्त अनुभवों को मंत्रालय के साथ साझा करने के उपरांत मंत्रालय द्वारा वन अधिकार धारकों को विभिन्न योजनाओं का पूर्ण लाभ दिलाने के लिए, धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (डीए-जेजीयूए) योजना के अंतर्गत मंत्रालय ने अन्य बातों के साथ-साथ एफआरए के तहत संभावित क्षेत्र का मानचित्रण, विरासत डेटा और दावा प्रक्रिया का डिजिटलीकरण, सामुदायिक वन संसाधन अधिकार (सीएफआर) प्रबंधन योजनाओं की तैयारी और क्रियान्वयन के लिए ग्राम सभा को समर्थन और एफआरए के तहत दावा निपटान प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए दो साल की अवधि के लिए राज्य और जिला/उपखंड स्तर पर समर्पित एफआरए प्रकोष्ठों की स्थापना जैसी कई पहल की हैं। डीए-जेजीयूए के तहत, सम्बंधित योजना दिशा-निर्देशों को लाभार्थी के योगदान को सीमित करने के लिए संशोधित किया गया है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 2019 में रिटयाचिका 108/2008 में मुख्य सचिवों को दिए गए निर्देशों के अनुसार, सभी राज्यों को समयबद्ध तरीके से दावों की अस्वीकृति की समीक्षा पूरी करनी है। जनजातीय कार्य मंत्रालय ने भी विभिन्न समीक्षा बैठकों और पत्रों के माध्यम से राज्यों से कहा है कि वे मुख्य सचिव की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय निगरानी समिति (एसएलएमसी) की बैठकें कम से कम तीन महीने में एक बार आयोजित करें ताकि एफआरए की कार्यान्वयन प्रक्रिया की निगरानी की जा सके और मौजूदा प्रक्रियाओं के अनुसार अस्वीकृत दावों की समीक्षा भी की जा सके। परंतु इसकी अनुपालना के संदर्भ में आज तक कोई भी प्रगति आयोग के समक्ष नहीं आई है।

"अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006" और उसके तहत बनाए गए नियमों के प्रावधानों के अनुसार, राज्य सरकारें

(टेबल 1.1) माननीय अध्यक्ष , श्री अंतर सिंह आर्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली के द्वारा मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य के जिलों का दौरा किया गया इस दौरान जिलों के अनुसूचित जनजाति के लोगों द्वारा दिये गये वन अधिकार से जुड़े अभ्यावेदनों की संख्या एवं जांच के पश्चात वितरित किए गए पट्टों की संख्या-

क्र. सं.	**जिला**	**आवेदकों की कुल संख्या**	**स्वीकृत पट्टों की संख्या**
1	बड़वानी	3258	806
2	नन्दूरबार	5619	4000
3	खरगोन	161	134
4	धूले	5885	141
5	धार	12728	2757
6	नाशिक	4524	515
7	ठाणे	735	467
	कुल	**32910**	**8820**

अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं तथा वर्तमान में 20 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में अधिनियम को लागू किया जा रहा है। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा दी गई अद्यतन प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, 31 मई 2025 तक कुल 51,23,104 दावे ग्राम सभा स्तर पर दायर किए गए हैं, इनमें 49,11,495 व्यक्तिगत और 2,11,609 सामुदायिक दावे शामिल हैं। इनमें से कुल 25,11,375 (49.02 प्रतिशत) अधिकार वितरित किए गए, जिनमें 23,89,670 व्यक्तिगत और 1,21,705 सामुदायिक अधिकार शामिल थे। कुल 18,62,056 (36.35प्रतिशत) दावे खारिज कर दिए गए और 749,673 (14.63 प्रतिशत) दावे निपटान के लिए लंबित हैं।

आयोग की ओर से आयोजित जनजाति संवाद तथा राजकीय प्रवासों/बैठकों इत्यादि में मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्य के निम्नांकित जिलों में जनजाति समुदाय के व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत वन अधिकार के दावों के संबंध में आयोग को अभ्यावेदन प्राप्त हुए थे। इन अभ्यावेदनों में बताया गया था कि उनके व्यक्तिगत वन अधिकार के दावे जिला प्रशासन द्वारा खारिज कर दिए गए थे। जिसके संबंध में आयोग द्वारा जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसमें जिले वन मंडल अधिकारी, जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त एवं आयोग के एक नामित अधिकारी के साथ-साथ स्थानीय समाज सेवी व्यक्ति को शामिल करते हुए प्राप्त अभ्यावेदन पर पुनः जांच कराई गई जिसके आधार पर निम्न सूची अनुसार वन अधिकार के पट्टे वितरित किए गए(टेबल 1.1)।

इस प्रकार राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष के रूप में मेरे व्यक्तिगत प्रयासों से मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र के जनजाति जिलों में वन अधिकार के व्यक्तिगत एवं सामुदायिक दावों को मान्यता प्रदान की जा रही है एवं यह कार्य सतत रुप से जारी है।

सांस्कृतिक धरोहर ही हमारी पहचान

डॉ आशा लाकड़ा
सदस्य,
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
उरांव जनजाति, झारखंड

हम आदिवासी समाज के लिए संस्कृति केवल परंपरा नहीं अपितु जीवन की आत्मा है। हमारी बोली, हमारा पहनावा, हमारे नृत्य, पर्व-त्योहार, प्रकृति के प्रति हमारा सम्मान – यही सब मिलकर हमारी असली पहचान बनाते हैं। मैं स्वयं एक आदिवासी महिला हूँ और उरांव जनजाति से आती हूँ। मैंने न केवल इसे जिया है, बल्कि इस पहचान पर गर्व भी किया है।

भारत के हृदय में बसे हमारे राज्यों – झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीगढ़ – में बसने वाले संथाल, मुंडा, उरांव, भील, बैगा जैसे समुदायों ने सैंकड़ों वर्षों से अपने सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखा है। सरहूल, करम, मड़ई, भगोरिया जैसे पर्व सिर्फ धार्मिक क्रियाएँ नहीं, बल्कि हमारे समाज की सामूहिक चेतना और प्रकृति से जुड़ाव के प्रतीक हैं।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की सदस्य के रूप में मेरी यह ज़िम्मेदारी है कि मैं देश के कोने-कोने में जाकर यह सुनिश्चित करूँ कि हमारे लोगों को उनकी योजनाओं, अधिकारों और अवसरों की सही जानकारी मिले, और उनकी समस्याओं का समाधान हो। पर इससे भी बड़ी ज़िम्मेदारी मैं मानती हूँ – हमारी सांस्कृतिक विरासत को सँजोने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की।

आदिवासी समुदाय अपनी समृद्धि सांस्कृतिक विरासत के लिए जाने जाते है जो कि कला, संगीत, नृत्य, साहित्य और सामाजिक धार्मिक प्रथाओं में शामिल है जो उनके जीवन और अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सांस्कृतिक धरोहर के विभिन्न पहलू निम्नानुसार है :-

उरांव जनजाति

(1) सरहूल त्यौहार व संगीत नृत्य: सरहुल महापर्व को नववर्ष की तरह मनाया जाता है ईस त्योहार मे नई नई फल फूल सब्जी और अन्न का पूजन के साथ सेवन किया जाता है।सरहुल आदिवासी समुदाय का सबसे बड़ा त्योहार है।

उरांव जनजाति झारखंड, ओड़ीसा, छत्तीगढ़, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम राज्यों में पायी जाती है। उरांव जनजतियों की एक अलग पहचान हैं। ऋतु के (मौसम) अनुसार गीत गाए जाते है एवं नृत्य किया जाता है। अप्रैल माह उरांव जनजातियों का सबसे बड़ा प्रकृति त्यौहार (पर्व सरहूल, जो पुस्तैनी और सनातनी है। इस पर्व में नये नये पुष्प और फल का पूजन, उपवास और सरना स्थल (आदिवासियों का मंदिर) पर घड़े में पानी रखकर वर्षभर होने वाली वर्षा व खेती का अनुमान लगाया जाता है। सरहूल पर्व में गाँव का पुजारी (पहान राजा) द्वारा पूजा अर्चना की जाती हैं, सरनास्थल पर मुर्गी बलि की प्रथा है। झारखंड में तो इस त्यौहार पर लाखों की संख्या में वाद्ययंत्रों के साथ, गाँव –गाँव से खोड़हा के रूप में शोभा यात्रा निकलती है,

क्या महिला, क्या पुरुष, क्या बच्चें बूढ़े सभी समरसता भाव से नृत्य करते हुए पूजास्थल की और जाते है। यह त्यौहार अलग अलग गावों में अलग-अलग दिन में मनाया जाता है और पूरे एक माह तक चलता हैं। इस त्यौहार पर एक विशेष लोकगीत गाया जाता है जो निम्न प्रकार हैं:

"सरई पूपन मेजेरकी पेलो भाग जोगनी लेखा लौकारते बरा लागी"

करमा:– सितम्बर माह में भाद्रपद एकादशी को रात्री में करमा वृक्ष की तीन डाली पहाना द्वारा काटी जाती हैं और पूरे गाँव के लोग नाच गान करते हुए करम राजा को अपने गाँव के अखरा (आखाड़ा) में गाढ़ा जाता है। इस त्यौहार के शुभ अवसर पर लड़कियाँ करमा का निर्जला उपवास करती है और करम पूजा बड़े धूम धाम से किया जाता है। यह पूजा अपने भाई की सलामती के साथ ही खेतों में अच्छी फसल होने के उपलक्ष्य में यह उत्सव मनाया जाता है यह त्यौहार दो दिनों तक चलता है। फिर करमा वृक्ष की डालियों का नदियों में विसर्जन किया जाता हैं। इस त्यौहार पर एक विशेष लोकगीत गाया जाता है जो निम्न प्रकार हैं:

"करम करम कहले गे आयो, करम का दिना कैसे आवे"

जतरा:- यह तरह तरह का होता है, साल भर अलग-अलग नाम से जतरा (मेला) लगता है। दसई मेला, जितिया मेला, डोल मेला, इन्द मेला, टुसू मेला, देव उठान मेला, यह एक दूसरे से मिलने का साधन है। इन्द मेला के बाद शादी ब्याह का समय शुरू होता है लड़का-लड़की के विवाह हेतु पारिवारिक संबंध बनाये जाते हैं। इस त्यौहार पर एक विशेष लोकगीत गाया जाता है जो निम्न प्रकार हैं:

"जतरा डाड़े जितिया जनमलें कैसे खेलब जतेरा दाड़े डाड़े खेलब जितिया दाड़े डाड़े"

सोहराई:– अनुसूचित जनजाति समाज में अपने पालतू जानवरों की भी पूजा करने की परंपरा हैं। दीपावली के दूसरे दिन गाय, बैल, भैंस, बकरी एवं अन्य पालतू जानवरों को नहला कर फूलों की माला पहनाई जाती हैं उस पर तेल सिंदूर किया जाता हैं। साथ ही इस त्यौहार में बलि देने की भी प्रथा हैं। सभी जानवरों को दाना खिलाया जाता हैं गाय की गौशाला में ही प्रसाद के रूप में तहरी (चिकन बिरयानी) बनायी जाती हैं किसी किसी स्थान पर तहरी को "सूड़ी भात" भी कहा जाता हैं। यह त्यौहार कार्तिक मास में किसी किसी राज्य में सभी समाज के लोगों द्वारा मनाया जाता हैं "सोहराई के समय रात्रि जागरण भी किया जाता हैं। इस त्यौहार पर तरह तरह के लोकगीत गाये जाते हैं एवं जगह जगह पर बैल को नचाया जाता हैं जिसे बोलचाल की भाषा में "गारु नाचा" भी कहा जाता हैं।

खान-पान:- बारह मास के बारह प्रकार के भोजन – छिलका रोटी, धुसका, डुम्बू पीठा, पुआ, ठेकुआ, चिकन-मटन, मछली, खपरा रोटी, मड़वा रोटी, धुतू लड्डू इत्यादि तरह-तरह, के पकवान / व्यंजन बनाये जाते है।

कला: - चित्रकारी, मूर्तिकारी, हस्तकला, शिल्पकला शामिल है उनकी कला अक्सर प्रकृति और पौराणिक कथाओं एवं सामाजिक जीवन से प्रेरित होती है।

साहित्य: - आदिवासी साहित्य में लोक कथाएँ, लोकगीत, कवितायें, लोकनायकों की कहानी, वीरांगनाओं की कहानी शामिल है जैसे कि वीरांगना सिनगी दई (सिनगी दीदी), जिन्होनें मुगलों को हराया और उरांव जनजाति के साम्राज्य रोहतासगढ़ (बिहार) को बचा लिया जिनकी याद में आज भी महिलाएँ 12 वर्षों में एक बार पुरुष वेश बदल कर "जनी शिकार" खेलने निकलती हैं यह परंपरा इतिहास को दोहराता है।

आज हम जिस तेज़ी से आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं, उसमें एक खतरा यह है कि हमारी भाषाएँ, लोक कलाएँ, परंपराएँ धीरे-धीरे विलुप्त हो सकती हैं। मैं यह बात हर मंच पर कहती हूँ।

"अगर संस्कृति को बचाना है, तो उसे केवल पुस्तकों में नहीं बल्कि जीवन में भी उतारना होगा"

हमारी लोकभाषाएँ जैसे संथाली, कुड़ुख, गोंडी, भीली, हल्बी – ये केवल बोलियां नहीं, हमारी सोचने कि शैली हैं। हमारी चित्रकला व हस्तशिल्प गीतों में जो गहराई है वह किसी भी आधुनिक कला से कम नहीं।

मैं सभी आदिवासी भाई-बहनों से यह आग्रह करती हूँ कि अपनी संस्कृति को अपनाएँ, अपनी भाषा में बात करें, अपने त्यौहारों को मनाएँ अपने बच्चों को अपने इतिहास से परिचित कराएं यही हमारी असली ताकत है।

आज जब मैं देश के अलग-अलग हिस्सों में जनजातीय समुदायों से मिलती हूँ, तो देखती हूँ कि हमारी पहचान आज भी जीवित है - बस उसे और सँजोने की जरूरत है। क्योंकि - हमारी संस्कृति ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है, और यह हमारी पहचान भी।

खुश रहना-एक कला

मुक्ता मकड़
वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

कबीर जी कहते हैं कि हंसकर मनुष्य मन के दुख, कष्ट एवं दुर्भावनाओं को दूर कर सकता है परंतु रोकर केवल उसके दुख में ही वृद्धि होती है। खुश रहने के लिए बड़ी-बड़ी उपलब्धियों की आवश्यकता नहीं होती है, परंतु छोटी-छोटी और साधारण सी चीजों में भी खुशियां मिल जाती हैं। हमारे भीतर आशावादी, सकारात्मक एवं प्रेरणादायक भाव एवं विचार होने चाहिए तभी हम खुश रह सकते हैं। इसलिए हमें अपनी परिस्थितियों को बेहतर बनाने के हरसंभव प्रयास करने चाहिए और जिन परिस्थितियों को हम नहीं बदल सकते उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि कहते हैं ना कि ''हमारे मन का हो तो अच्छा है, परंतु हमारे मन का न हो तो और भी अच्छा क्योंकि उसमें ईश्वर की इच्छा शामिल होती है''। जैसे एक बच्चे से उसके माता-पिता बेहतर जानते हैं कि उसके लिए ज्यादा अच्छा क्या है! उसी तरह से परमात्मा जानते हैं कि हमारे लिए क्या बेहतर है और हमें वही मिलता है जो हमारे लिए बेहतर होता है।

हमें नकारात्मक स्थिति में भी कुछ न कुछ सकारात्मक देखने की कोशिश करनी चाहिए। जैसे एक नकारात्मक व्यक्ति एक ग्लास को पानी से आधा भरा हुआ देख कर कहता है कि यह ''आधा खाली है'' मगर एक सकारात्मक व्यक्ति उसी ग्लास को ''आधा भरा हुआ'' बताता है। कभी एक कहानी पढ़ी थी कि एक व्यक्ति था, जिसके बच्चे बड़े हो गए थे और अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त थे। वह इसलिए दुखी रहता था कि उन्हें अपने माता-पिता की बिल्कुल भी परवाह नहीं थी। एक बार वह अपनी पत्नी के साथ जून के महीने में अपनी गाड़ी में मसूरी घूमने जा रहा था। रास्ते में उनकी गाड़ी खराब हो गई। पति महोदय पहले से ही परेशान तो थे ही, सारे रास्ते झुंझलाते हुए आए थे। गाड़ी खराब होने पर मानों उन्हें गुस्सा करने का एक और कारण मिल गया। बुड़बुड़ाते हुए वे

गाड़ी से उतरे। दूर-दूर तक नजर दौड़ने पर खाली सड़क दिखाई दे रही थी लेकिन कुछ कदम आगे जाने पर सड़क के अंतिम छोर पर एक टूटी-फूटी झोंपड़ी दिखाई दी। गर्मी का मौसम था, प्यास से बेहाल, कोई और चारा न पाकर पति महोदय झुंझलाते हुए बोझिल कदमों से झोंपड़ी की ओर चल पड़े, पत्नी बेचारी उनके पीछे-पीछे चुपचाप चल पड़ी। झोपड़ी के बाहर उन्होंने देखा कि एक बहुत कमजोर सी बुढिया, मैली-कुचैली सी धोती पहने चिड़ियों को दाना डाल रही थी और बड़े प्यार से पुचकार कर कह रही थी ''आओ, मेरी बेटियों आओ, अपने हिस्से का दाना चुगो.......आओ-आओ।'' वो दोनों उत्सुकतावश कभी चहचहाती चिडियों को देखते जो उस जंगल में मंगल कर रही थीं और कभी उस बुढ़िया को, जिसके खुद के खाना का ठिकाना न था लेकिन वो अपने लिए मुश्किल से जुटाए अनाज में से उन पंछियों को बड़े प्यार से खिला रही थी और बड़ी खुश नजर आ रही थी। बुढ़िया ने उन्हें बड़े आदर से बैठाया, पानी पिलाया। पति ने बड़े ही दुख से पूछा ''अम्मा, लगता है आपकी देखरेख करने वाला आपके परिवार में कोई नहीं है तभी तो इस निर्जन में, बिल्कुल अकेली पड़ी हैं।'' बुढ़िया ने जो जवाब दिया उसे सुनकर उस व्यक्ति पर तो मानों घड़ों पानी पड़ गया। बुढ़िया ने कहा ''मेरे तीन बेटे हैं जो खूब अच्छा खाते-कमाते हैं और अपनी-अपनी गृहस्थी में बहुत खुश हैं। उनके लिए बूढ़ी मां एक भार बन चुकी थी इसलिए वो मुझे एक-दूसरे पर थोपते थे। मेरे स्वाभिमान को ठेस पहुंचती थी। इसलिए मैंने खुशी-खुशी अपनी दुनिया अलग यहां वीराने में बसा ली है।

मैं उनसे नाराज भी नहीं हूं, फिर भी आजीविका के लिए उनसे कुछ नहीं लेती हूं। मैंने अपनी खुशी इन बेजुबान पंछियों के प्यार में ढूंढ ली है और मैं बहुत खुश हूं।'' अब वो व्यक्ति जो अपनी पत्नी के साथ होते हुए भी, अपने बच्चों के छोड़ जाने के कारण खुद को दुनिया का सबसे बेचारा व्यक्ति समझ रहा था, उसे खुद पर शर्म आने लगी। आज उसने उस अनपढ़, गरीब बुढ़िया से एक बड़ी सीख ली थी कि ''अपने सुख-दुख के लिए हम खुद ही जिम्मेदार हैं। जैसी भी परिस्थिति हो, हमें उसमें खुश रहना चाहिए। यही जीवन जीने की सही कला है।''

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

भावना मदान
सहायक निदेशक (राजभाषा)
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है जहां विभिन्न जाति, प्रजाति, भाषा, परंपरा, धर्म के लोग एक साथ रहते हैं। बहुसांस्कृतिक शब्द से तात्पर्य सांस्कृतिक विविधता से है। कोई भी देश तभी बहुसांस्कृतिक कहलाता है जब वह अपने यहाँ उपस्थित लगभग सभी संस्कृतियों को समान महत्व देता है।

हमारे देश में शास्त्रीय संगीत (हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक) एवं शास्त्रीय नृत्य जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी इत्यादि के बारे में तो सभी को ज्ञात होगा परंतु क्या आप जानते हैं कि भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में कुछ 'शास्त्रीय भाषाएं" भी हैं?

भारत एक बहुभाषीय देश होने के कारण यहां विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। कहते हैं कि यहां प्रत्येक प्रांत में अलग अलग भाषाएं बोली जाती हैं- कहीं हिंदी, तो कहीं उड़िया, कहीं मराठी तो कहीं तमिल। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार देश में 22 आधिकारिक भाषाएं है। इसी प्रकार कुछ भाषाओं को "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा मिला है।

भारतीय भाषा को "शास्त्रीय भाषा" दर्जा देने की नींव आजादी के बाद रखी गई। संविधान सभा में जब संस्कृत, वोटों के आधार पर आधिकारिक भाषा नहीं बन सकी, तो अनुच्छेद 351 के अंतर्गत कुछ भारतीय भाषाओं को विशेष भाषा का दर्जा देने का प्रावधान किया गया।

शास्त्रीय भाषा किसे कहते हैं?

शास्त्रीय भाषा ऐसी भाषा होती है जिसका कम से कम 1500-2000 वर्ष पुराना इतिहास हो, साहित्य / ग्रंथों एवं वक्ताओं की प्राचीन परंपरा हो और साहित्यिक परंपरा का उद्भव दूसरी भाषाओं से न हुआ हो।

आधिकारिक मानदंड

सरकार द्वारा कुछ आधिकारिक मानदंड निर्धारित किए गए हैं जिन्हें पूरा करने पर ही किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जाता है। वे मानदंड इस प्रकार हैं-

- उस भाषा में लिखित आरंभिक ग्रंथों का इतिहास लगभग 1500-2000 वर्ष पुराना होना चाहिए।
- संबंधित भाषा में प्राचीन साहित्य / ग्रंथों का एक हिस्सा होना चाहिए, जिसे उस भाषा को बोलने वाली पीढ़ियाँ अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार करती हों।

• उस भाषा की अपनी मौलिक साहित्यिक परंपरा होनी चाहिए।

• शास्त्रीय भाषा और उसका साहित्य, आधुनिक भाषा और साहित्य से भिन्न है, इसलिए शास्त्रीय भाषा और उसके परवर्ती रूपों में विच्छिन्नता हो सकती है।

लाभ

शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होने के पश्चात् केंद्र सरकार उक्त भाषा को निम्नलिखित लाभ प्रदान करती है-

• संबंधित भाषा के प्रतिष्ठित विद्वानों को प्रतिवर्ष दो बार सम्मान देने की व्यवस्था।

• उस भाषा में अध्ययन के लिए उत्कृष्ट केंद्रों की स्थापना।

• विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से आग्रह कर आरंभिक तौर पर केंद्रीय विश्वविद्यालयों में संबंधित भाषा में विशेषज्ञता प्राप्त प्रतिष्ठित शोधार्थियों के लिये शास्त्रीय भाषा की कुछ सीटें आरक्षित करवाना।

शास्त्रीय भाषाएं

भारत में कुल 6 भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है-

तमिलः तमिल भाषा एक द्रविड़ भाषा है और यह भारत की पाँचवी सबसे बड़ी भाषा है। तमिल का लगभग 2500 वर्षों का अखंडित इतिहास लिखित रूप में है। इसके ऐतिहासिक वर्गीकरण में प्राचीन- पाँचवी शताब्दी ई. पू. से ई.सा के बाद सातवीं शताब्दी, मध्य- आठवीं से सोलहवीं शताब्दी और आधुनिक- 17वीं शताब्दी से काल शामिल हैं। तमिल भाषा को वर्ष 2004 में शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

संस्कृत: संस्कृत भाषा विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा है और इससे कई भाषाएं उत्पन्न हुई है। यह हिंद-आर्य भाषा हैं जो हिंद-यूरोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है। आधुनिक विद्वान मानते हैं कि संस्कृत भाषा पाँच हजार सालों से चलती आ रही है। संस्कृत भाषा के दो रूप माने जाते हैं वैदिक या छांदस और लौकिक। संस्कृत भाषा को वर्ष 2005 में शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

तेलुगुः तेलुगु भाषा दक्षिण भारत की चार द्रविड़ भाषाओं में से एक है। यह आंध्र प्रदेश राज्य की आधिकारिक भाषा है। इस भाषा की उत्पत्ति पहली शताब्दी ई. पूर्व के रूप में हुई थी। तेलुगु साहित्य में पद्य, उपन्यास या नाटक की सभी विधाओं में लेखन के विभिन्न मिश्रित रूप हैं। यह भाषा तमिलनाडु, कर्णाटक, ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्यों में भी बोली जाती है। तेलुगु भाषा को वर्ष 2008 में शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

कन्नड़: कन्नड़ कर्नाटक राज्य की राजभाषा है और दक्षिण द्रविड़ शाखा से सम्बद्ध है। यह साहित्यिक परंपरा वाली चार प्रधान द्रविड़ भाषाओं में दूसरी सबसे प्राचीन भाषा है। हालमिदी स्थित पहला कन्नड़ अभिलेख 450 ई. का है। कन्नड़ के तीन क्षेत्रीय प्रकारों की पहचान की जा सकती है, दक्षिणी (मैसूर), उत्तरी (धारवाड़) और तटीय (मंगलोर)। वर्ष 2008 में कन्नड़ भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

मलयालम: मलयालम दो शब्द अर्थात "मलय' (पर्वत या सफेद चंदन) और "आलयम" (स्थान या घर) से बना है। यह भाषा मुख्यतः दक्षिण-पश्चिमी तटीय राज्य केरल में बोली जाती है। यह केरल और केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप की राजभाषा है। इस भाषा का प्राचीनतम प्रमाण लगभग 830 ई. का एक अभिलेख है। वर्ष 2013 में मलयालम भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

ओड़िया: ओड़िया भाषा आधुनिक भारत-आर्य भाषा परिवार के अंतर्गत आती है। इसकी लिपि का विकास भी नागरी लिपि के समान ही ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसकी उत्पत्ति 10 वीं शताब्दी में हुई थी। यह भारत के ओडिषा राज्य की प्रमुख भाषा है। वर्ष 2014 में ओड़िया भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

शास्त्रीय भाषाओं के लिए समर्पित संस्थान

संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2019 में कुछ संस्थानों को सूचीबद्ध किया गया जो शास्त्रीय भाषाओं के लिए समर्पित हैं:

संस्कृत हेतु: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति; और श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली।

तेलुगु और कन्नड़ हेतु: मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 2011 में स्थापित केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान में संबंधित भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्ट केंद्र।

तमिल हेतु: सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ क्लासिकल तमिल, चेन्नई।

मेरी यादगार यात्रा

वसीम अकरम
संयुक्त सचिव के निजी सहायक
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

आज दिनांक 16 जनवरी 2025 को मैं आगरा जा रहा हूँ, पर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मुझे कोई ज़बरदस्ती ले जा रहा है। मैं एकदम उदास हूँ, दिल टूटा हुआ है और ईमानदारी से कहूँ तो आँखों में नमी है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैंने ना जाने के लिए अपने साथ के लोगों से मना किया था, मगर कहते हैं ना, ज़्यादा सामाजिक होने की सजा कई बार आपको भुगतनी पड़ती है। इसका उदाहरण है मेरा आज आगरा जाना। क्योंकि यदि मैं इन सबकी मर्जी के खिलाफ जाता तो ये लोग भी अपना आगरा जाने का प्लान कैंसिल कर देते और इसका दोष मेरे सिर पर मढ़ देते। इसलिए मुझे मजबूरी में आगरा जाने के लिए हाँ करना पड़ा।

मगर आज जब मैं आगरा जा रहा हूँ, तो मेरा दिल बहुत बेचैन हो रहा है और ऐसा लग रहा है जैसे मुझे कोई अंदर से खोखला कर रहा है। देखो, मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि मुझे बचपन से आगरा के ताजमहल को देखने की बड़ी तमन्ना थी। एक बार 2014 में मैं आगरा गया था और उस समय मैंने अपने सफर को बहुत एंजॉय किया था। तब मैंने अल्लाह से दुआ की थी कि जिंदगी में एक बार फिर इस खूबसूरत मकबरे और शहर के दीदार का मौका मिले। मगर आज न जाने क्यों, जैसे-जैसे आगरा मेरे करीब आ रहा है, वैसे-वैसे मेरे चेहरे की उदासी गम में बदलती जा रही है।

अंदर से दिल चाहता है कि इन सबको छोड़कर यहाँ से भाग जाऊँ, और दिमाग कहता है कि पिछले दिनों इतने दुःख सहे हैं, यह दुःख भी सह लो। दिखावा ही सही, चेहरे पर मुस्कान लाओ और अपने अंदर के दर्द को जाहिर मत होने दो। कई बार न चाहते हुए भी मैं अपने दिमाग की गिरफ्त में आ जाता हूँ और अब मेरे दिमाग ने मेरे दिल पर अपना कब्ज़ा कर लिया है। मैंने अब दिमाग के कहे अनुसार कभी हँसना शुरू कर दिया है और कभी उदास हो जाता हूँ।

गाड़ी में मेरे अलावा कई लोग हैं और वे बहुत बातें कर रहे हैं, पर सच कहूँ तो मुझे किसी की भी आवाज सुनाई नहीं दे रही है। दिल और दिमाग की लड़ाई की वजह से मुझ पर थकान हावी हो गई है और मुझे हल्की-सी नींद आने लगी है। शायद कुछ देर के लिए मैं इस सफर के बारे में भूल गया।

अपने ख्वाब में मैंने एक आवाज सुनी,

जो मुझसे कह रही थी कि ज़िंदगी इतनी आसान नहीं है जितनी लोग समझते हैं। तब मैंने उस पुकारने वाले से कहा कि मैं तो पिछले एक दशक से यह बात जानता हूँ कि ज़िंदगी एक रंगमंच है और आपको अपने चेहरे पर मुस्कुराहट का मुखौटा लगाकर अपने दर्द छुपाने पड़ते हैं। यहाँ किसी को भी इस बात की परवाह नहीं होती कि आपके अंदर क्या चल रहा है। अगर आपने अपनी बातें साझा कीं, तो हमेशा यह डर बना रहता है कि कोई आपकी भावनाओं को गलत न समझ ले। इसी वजह से मैं अपने अंदर की उलझन किसी के साथ साझा नहीं करता।

इसी बीच एक व्यक्ति ने कहा, "हम आगरा की ज़मीन पर आ गए हैं।" जैसे ही मैंने यह सुना, मेरा दिल बैठ गया। मैंने खुद को संभाला और अपने जज़्बातों पर काबू पाते हुए खिड़की से बाहर देखने लगा। पता नहीं क्यों, आज मुझे यह खूबसूरत शहर एक वीराने जैसा लग रहा था।

जब हम ताजमहल की ओर बढ़े, तो मैंने महसूस किया कि मेरे कदम चाहकर भी इस ज़मीन पर नहीं पड़ना चाहते। मैं कुछ देर तक इस स्थिति में रहा, और मेरे साथी मुझे समझाने लगे कि अब जब मैं उनके कहने से यहाँ तक आ गया हूँ, तो इस ज़मीन पर कदम भी रख दूँ और अच्छा व्यवहार भी शुरू कर दूँ।

कभी-कभी, या शायद कई बार, ऐसा होता है कि आप न चाहते हुए भी अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए वह सब करते हैं जो आप उस वक्त नहीं करना चाहते। मगर उनके कहने से मैं गाड़ी से बाहर निकला और टिकट लेने चला गया। फिर हमने गेट नंबर 6 से ताजमहल में प्रवेश किया। मेरे साथी बहुत उत्साहित थे कि वे मोहब्बत की इस मिसाल को अपनी आँखों से देख पाएँगे।

ताजमहल के पास पहुंचने पर जब मैंने पहली बार इसकी झलक देखी, तो मेरी आंखें मानो कुछ समय के लिए वहीं ठहर गईं। यह इमारत वाकई में दुनिया के सात अजूबों में से एक है। उसकी खूबसूरती इतनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी कि मेरे सारे गम और परेशानियां कुछ समय के लिए गायब हो गईं। मुझे महसूस हुआ कि मैं इस मकबरे से कभी नफरत नहीं करता था। दरअसल, मेरे अंदर जो गुस्सा था, वह किसी और कारण से था, न कि इस जगह से।

ताजमहल को जब आप दूर से देखते हैं, तो इसकी चारों मीनारें और बीच का मुख्य गुम्बद, सब मिलकर एक अद्वितीय दृश्य पेश करते हैं। उसकी सफेद संगमरमर की दीवारों पर पड़ती धूप की किरणें, ऐसा प्रतीत कराती थीं जैसे यह किसी जादुई नगरी का हिस्सा हो। मैंने गौर किया कि यह इमारत सिर्फ एक मकबरा नहीं है, बल्कि सच्चे प्यार का प्रतीक है। यह उस प्रेम की कहानी को बयां करती है जो शब्दों से कहीं परे है।

जैसे-जैसे मैंने ताजमहल को करीब से देखा, मेरी हर सांस एक नई कहानी बुनने लगी। मेरे सारे गुस्से, मेरे दिल की सारी उलझनें उस वक्त फीकी पड़ गईं। मैं यह सोचने लगा कि शायद यही मोहब्बत की ताकत है, जो इंसान के अंदर के दर्द को भी मिटा सकती है। मैं अब अपने साथियों की बातों पर ध्यान देने लगा और महसूस किया कि उनकी खुशियां भी मेरी खुशियों का हिस्सा बन सकती हैं।

जब मैं ताजमहल के गार्डन में गया और वहां की हरियाली को देखा, तो मेरे मन में एक अजीब-सी शांति आने लगी। मेरे कदम अब पहले से अधिक सहज हो गए थे। मैंने अपनी पूरी ताकत से इस खूबसूरत इमारत के हर कोने को महसूस करने की कोशिश की। मेरे साथियों के चेहरे पर खुशी और उत्साह देखकर मुझे भी महसूस हुआ कि यह यात्रा मेरे लिए कितनी खास बन सकती है।

ताजमहल ने मुझे यह सिखाया कि मोहब्बत की असली खूबसूरती उसमें छिपी हुई सच्चाई और बलिदान में होती है। यह इमारत सिर्फ संगमरमर से बनी एक संरचना नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि सच्चा प्यार समय की सीमा को पार कर सकता है।

जब मैंने वहां से बाहर निकलते हुए पीछे मुड़कर ताजमहल को देखा, तो मुझे लगा कि मैंने इस यात्रा से बहुत कुछ सीखा है। मैंने अपने अंदर के गुस्से को थोड़ा-थोड़ा करके वहीं छोड़ दिया था। अब मैं वापस लौटने के लिए तैयार था, लेकिन इस बार मेरा दिल और दिमाग एक अजीब-सी सुकून की भावना से भरा हुआ था।

इस यात्रा ने मुझे यह एहसास कराया कि जिंदगी में कुछ चीजें हमें तब भी सिखा जाती हैं जब हम उन्हें नहीं अपनाना चाहते। और यही जिंदगी की सबसे बड़ी खूबसूरती है।

बोलो अब तुम!

रवीश
एम.टी.एस.
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

यह कविता आदिवासी समाज की चुप्पी तोड़ने और हक की आवाज बुलंद करने की प्रेरणा देती है। यह उनकी संस्कृति, अधिकार और गौरवपूर्ण इतिहास को सम्मानित करते हुए, उन्हें आत्मसम्मान और न्याय के लिए खड़ा होने का संदेश देती है।

कब तक चुप रहोगे साथी?
कब तक सहते जाओगे?
जंगल छीने, जल भी छीना,
कब तक यूँ झुकते जाओगे?

क्यों न अब तुम बोलो जरा,
धरती माँ की पीड़ा पर?
सीने पर जो पाँव रखे है
क्यों न अब वो हिल जाएँ डर?

"हाँ जी, हाँ जी" कहने वाले,
अब "नहीं" कहना सीखो तुम,
जिस धरती से नाता है जन्मों का
अब हक से उसे अपनाओ तुम

जो कहते थे, "तुम अनपढ़ हो",
अब कलम उठाओ हाथों में
जो कहते थे, "तुम कमजोर हो",
अब गरजो अपनी बातों में।

भाषा, वेश, परंपरा अपनी
शान बनाओ, बोझ नहीं
रग-रग में जो गर्व पुरखों का
उसमें झुकने की बात नहीं

बोलो अब तुम, समय यही है
तोड़ो हर चुप्पी की दीवार
आदिवासी हूँ, कमजोर नहीं
गूँजे अब हक की हुंकार।

विद्या

राम प्रवेश चौहान
नई दिल्ली नगरपालिका परिषद
विद्युत बी एम 2
लिफ्ट आपरेटर
लोक नायक भवन खान मार्केट, नई दिल्ली

भूषण है विद्या आभूषण है विद्या,
है इस तन का अलंकार , दोष दूषण है विद्या।
कभी होता नही मलिन ज्योत रौशन है विद्या,
है करता उजागर जीवन बेहतरीन है विद्या।।

यह आभा है प्रभा है दिनकर है विद्या,
यह नित्य प्रकाश नव किरण रश्मि है विद्या।
यह प्रजाओं के स्वामी सम्राट है विद्या,
तो यह मधुर स्वर में बजती घुंघरू की आहट विद्या।।

यह तरूवर की छाया शीतल है विद्या,
यह आनन्द की ओर अग्रसर पल पल है विद्या।
अति सुख है विद्या समृद्धि है विद्या,
शांति सद्भाव सद् व्यवहार है विद्या।।

यह स्वामी सखा हितकारी है विद्या,
यह सब के लिए परोपकारी है विद्या।
यह सरिता है शीतल सरोवर है विद्या,
करता कल कल यह गंगा की तेवर है विद्या।।

यह क्षीर समुन्दर अथाह है विद्या,
यह दामन में लालसा पूर्ण भरता हर चाह है विद्या
यह वेद की जननी तो गीता की सार है विद्या,
श्री रामायण पुराणों की भंडार है विद्या।।

रितुराज है विद्या तो सम्राटों का सम्राज्य है विद्या,
यह आत्मबल का बलाबल विश्वास है विद्या।
अंत नही जिसका वह आकाश है विद्या,
यह शीतल मंद सुगंध पवन उन्चास है विद्या।।

यह दौलत है बढता न घटता कभी भी,
जितना बिखेरो या बांटो यह विद्या।
प्रवेश यह दौलत है चल है अचल है,
जितना हिय से हो साटो यह विद्या।।

यह अंगवस्त्र श्रृंगार नूतन है विद्या,
यह जीवन पर्यन्त अनमोल धन है यह विद्या
करता शीतल प्रकृति बरसता बादल घन है यह विद्या
यह आत्मा को समेटे हुए जैसे अजर अमर तन है यह विद्या।।
गूँजे अब हक की हुंकार।

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

Social Media Corner

/ncsthq

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

Social Media Corner

30th August 2024

"एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण करते हुए आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य।

12th September 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य जी ने जलगांव, महाराष्ट्र में अनुसूचित जनजाति के युवाओं से संवाद किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की ऊर्जा, समर्पण और नवाचार से ही भारत का सशक्तिकरण संभव है। ऐसे संवाद से युवा देश के विकास हेतु प्रेरित होते हैं।

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

12th September 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने जलगांव जिले के ग्राम वेजापूरा में "वन रक्षा समिति" की बैठक में अनुसूचित जनजाति के भाई-बहनों से मुलाकात कर उनके अधिकारों पर चर्चा की और "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण कर जंगल बचाने का आह्वान किया।

17th-30th September 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा 17 से 30 सितंबर 2024 तक आयोजित हिंदी पखवाड़ा की विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किए गए और पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ, जिसमें श्री अंतर सिंह आर्य, माननीय अध्यक्ष,राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ने पुरस्कार वितरित किए।

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

24th September 2024

The 154th meeting of the National Commission for Scheduled Tribes is being held on 24 September 2024 under the chairmanship of Shri Antar Singh Arya ji, Hon'ble Chairman of NCST.

19th September 2024

Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairman, NCST, presided over the review of constitutional safeguards for Scheduled Tribes at SBI, Mumbai. Hon'ble members Shri Nirupm Chakma, Shri Jatothu Hussain, and other NCST officers were also present.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

24th September 2024

नई दिल्ली में आयोजित समता सैनिक दल के स्थापना शताब्दी समारोह में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा शामिल हुए। इस दौरान अपने उद्बोधन में उन्होंने उपस्थित जन समूह को आयोग के कार्य, गतिविधियों और शक्तियों के विषय में अवगत कराया।

25th September 2024

Tribal representatives from Manipur (Kuki) met Shri Antar Singh Arya, Hon'ble Chairman and Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST seeking urgent action to safeguard and protect their constitutional rights and for prevention of atrocities committed against them.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes   #NCST

8th October 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने अमरावती में युवा संवाद कार्यक्रम में सैकड़ों युवाओं को संबोधित किया और जिला अधिकारियों संग योजनाओं की समीक्षा कर जनजातीय समाज की समस्याओं के समाधान के निर्देश दिए।

9th October 2024

नागपुर जिले की यात्रा पर आए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष, श्री अंतर सिंह आर्य जी का रविभवन में विभिन्न जनजातीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने स्वागत किया और उन्हें अपनी विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया।

15th October 2024

झाबुआ जिले में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत हाथीपावा पहाड़ी पर पौधारोपण किया। इस दौरान कई अधिकारी और जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

Like   Comment   Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

15th October 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने झाबुआ में जिला स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की और विभिन्न विभागों से अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी ली।

18th October 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष, श्री अंतर सिंह आर्य ने भोपाल में महामहिम राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल से मुलाकात की और जनजाति प्रकोष्ठ के सदस्यों के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

26th October 2024

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष, श्री अंतर सिंह आर्य ने भोपाल में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री डॉ. मोहन यादव जी से मुलाकात कर जनजातीय समस्याओं के समाधान पर चर्चा की।

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

13th November 2024

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma visited Baganpara, Bajeisora, and Arotinagar villages in CADC, checking on villagers' well-being and welfare schemes' impact. He encouraged them to utilize benefits like PMAY, Ayushman Bharat, and pensions.

10th November 2024

Hon'ble Member, NCST, Shri Nirupam Chakma attended the Kathina Robe Weaving Program at Hujee Mawnaw Vihar ,Udaltana-II, CADC. In this ancient Buddhist tradition, Chakma women weave robes overnight to offer to monks.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

16th November 2024

Shri Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST, attended the Valedictory Session of a National Conference on Indigenous Knowledge, Tribal Traditions, and Cultural Practices at JNU, New Delhi. He spoke on tribal traditions, development, and the Commission's role.

26th November2024

The National Commission for Scheduled Castes (NCSC) organized an interaction programme with National Commission for Scheduled Tribes (NCST), National Commission for Minorities (NCM), National Commission for Backward Classes (NCBC) and National Commission for Safai Karamcharis (NCSK), in New Delhi.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

18th December 2024

A team led by Shri. Nirupam Chakma, Hon'ble Member is made to the tribal habitations of Puspa, Kurandi and Chitalur villages of Jagdalpur District of Chattisgarh to meet Amnait/Amneet and Amnit Communities of Chattisgarh.

A field visit led by Shri. Nirupam Chakma, Hon'ble Member is made to the tribal habitations of in Ambagarh Chowki District of Chattisgarh to meet Sonjharia/Sonjhara/Sonjhari Communities of Chattisgarh.

A team led by Shri. Nirupam Chakma, Hon'ble Member, NCST have visited Udalguri, Baksa, Tamulpur and Kamrup Districts of Assam to meet Sarania Kacharis community of Assam.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

21st February 2025

Hon'ble Chairperson of NCST, Shri Antar Singh Arya, visited the Aadi Mahotsav at Major Dhyan Chand Stadium, New Delhi. He explored the rich heritage of tribal handicrafts, arts, and cuisine, celebrating India's diverse indigenous culture.

13th March 2025

13th March 2025 Hon'ble Member, NCST, Shri Jatothu Hussain conducted a review meeting with the officials of the Animal Husbandry and Fisheries Department at the State Capital, Hyderabad Secretariat.

30th April 2025

Hon'ble Chairperson of NCST Shri antar Singh Arya, Hon'ble NCST Members Shri Nirupam Chakma, Dr. Asha Lakra and Shri Jatothu Hussain addressing a Press Conference after the State level review meeting at the Mizoram Secretariat in Aizawl.

Like Comment Share

National Commission for Scheduled Tribes

#National Commission for Scheduled Tribes #NCST

28th May 2025

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय सदस्य श्री निरुपम चाकमा ने उत्तराखंड राज्य प्रवास के दौरान वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की समीक्षा बैठक की। समीक्षा बैठक में संस्थान की निदेशक डॉ. रेनू सिंह, IFS सहित संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी व लाइजन अधिकारी उपस्थित रहे।

31st May 2025

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने बड़वानी (म.प्र.) के निवाली स्थित कस्तूरबा गांधी वनवासी कन्या आश्रम का भ्रमण एवं निरीक्षण किया। यह आश्रम विगत सात दशकों से जनजातीय बालिकाओं के शिक्षा, संस्कार व आत्मनिर्भरता हेतु समर्पित है।

5th June 2025

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के माननीय अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य ने 5 जून 2025 विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में दाहोद (गुजरात) के सर्किट हाउस में वृक्षारोपण किया । साथ में श्री अभिषेक मेडा प्रदेश महामंत्री एवं श्री जयदीप राठौर प्रदेश सचिव एसटी मोर्चा भी उपस्थित रहे।

Like Comment Share

सत्यमेव जयते

National Commission for Scheduled Tribes

www.ncst.nic.in

/ncsthq